A Pratibha Spandan's Journal
HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

विस्तारित होते शहरी क्षेत्रों में सतत जीवन के लिए चुनौतियाँ: एक सामाजिक और साहित्यिक विश्लेषण

Dr. Shaiphali Jain[1], Dr. Poonam Chauhan[2]
Assistant Professor, Faculty of Education, Teerthanker Mahaveer University Moradabad

OPEN ACCESS CC BY

सारांश

पूरे इतिहास में, शहर शिक्षा, संस्कृति और नवाचार के मुख्य केंद्र रहे हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि दुनिया के सबसे अधिक शहरी देश सबसे अमीर हैं और उनमें मानव विकास सबसे अधिक है। तेजी से हो रहे शहरीकरण में समाज की खुशहाली को बेहतर बनाने की क्षमता है। हालाँकि दुनिया के लगभग आधे लोग ही शहरों में रहते हैं, लेकिन वे वैश्विक घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 80 प्रतिशत से अधिक उत्पादन करते हैं। शहर युवा भी हैं ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक युवा और कामकाजी उम्र के वयस्क रहते हैं, जो उन्हें जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण स्थान बनाता है और दुनिया भर के शहरों में गरीबी दूर करनेए बुनियादी ढांचे में सुधार लाने और प्रदूषण से निपटने के उद्देश्य से पहल की जा रही है। फिर भी शहरीकरण मानव विकास के लिए कई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। अनुमान है कि दुनिया के शहरी विस्तार का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा झुग्गियों में हो सकता है, जिससे आर्थिक असमानताएँ और अस्वास्थ्यकर स्थितियाँ बढ़ सकती हैं। तेज़ शहरीकरण पर्यावरण संबंधी चिंताओं से भी जुड़ा हुआ है और तटीय क्षेत्रों या नदी के किनारों पर स्थित कई शहर तूफ़ान, चक्रवात और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रति भी संवेदनशील हो सकते हैं। इसी तरहए खराब शहरी बुनियादी ढाँचा जैसे कि अविश्वसनीय बिजली प्रणाली, भीड़भाड़ वाली सड़कें और खराब सार्वजनिक परिवहन, अकुशल बंदरगाह और अपर्याप्त स्कूल . शहरों की प्रतिस्पर्धात्मकता और आर्थिक संभावनाओं को कम करते हैं। जैसे.जैसे शहर बढ़ते हैं, सरकारों को सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे की तेज़ी से बढ़ती माँगों को पूरा करना होगा। कई जगहों पर वे तालमेल नहीं रख पा रहे हैं। दुनिया को सामाजिक.आर्थिक विकास की दिशा में एक मील के पत्थर के रूप में समावेशी और टिकाऊ शहरीकरण की आवश्यकता है। भविष्य के मानव विकास की संभावनाएं काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती हैं कि इन बढ़ते शहरों का प्रबंधन कितनी अच्छी तरह से किया जाता है।

मुख्य शब्दः शहरीकरण, शिक्षा, संस्कृति, नवाचार प्राकृतिक आपदा, आर्थिक विकास

भूमिका

तेजी से बढ़ते वैश्विक शहरीकरण के साथ, बदलते शहरी पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य और कल्याण के बीच संबंधों को समझने के महत्व को तेजी से पहचाना जा रहा है। हालाँकि, संबंधों की जटिलता के पीछे का विज्ञान खराब तरीके से विकसित हुआ है। दुनिया की आधी से ज्यादा आबादी अब शहरों में रहती है, और इस अनुपात के निकट भविष्य में बढ़ने का अनुमान है, शहर भविष्य की स्थिरता और मानव स्वास्थ्य और कल्याण के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। शहरी पर्यावरण और स्वास्थ्य और कल्याण परिणामों को जोड़ने का मूल्य अब अच्छी तरह से पहचाना जाता है, हालाँकि असंख्य संबंध वैज्ञानिक रूप से समझ से दूर हैं, शहरी पर्यावरणीय नियोजन, नीति और शासन का मार्गदर्शन करना तो दूर की बात है।

शहरी वातावरण बहुआयामी, विविध, गतिशील, जटिल और विकासशील हैं, जैसे कि मानव स्वास्थ्य और कल्याण की अंतर्निहित विशेषताएं हैं। वैश्विक स्तर पर, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य की स्थिति बेहतर है। शहरी जीवन के कई सकारात्मक पहलू, जैसे कि रोजगार, उच्च आय, शिक्षा के बेहतर अवसर और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच, ग्रामीण से शहरी प्रवास को प्रोत्साहित करते हैं। हालांकि, हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि शहरी स्वास्थ्य की स्थिति के ऐसे लाभ शहरी वातावरण के प्रतिकूल प्रभावों, आहार में वसा की वृद्धि और जीवन के गतिहीन तरीकों के कारण खत्म हो सकते हैं।

संबद्ध स्वास्थ्य जोखिमों के साथ संभावित शहरी खतरों में घटिया आवास, भीड़भाड़ वाली रहने की स्थिति, दूषित भोजन, गंदा पानी, अपर्याप्त सफाई, खराब ठोस अपशिष्ट निपटान सेवाएं, वायु प्रदूषण और भीड़भाड़ वाला यातायात शामिल हैं। इन स्वास्थ्य असमानताओं का पता शहरी निवासियों की सामाजिक और जीवन स्थितियों में अंतर और शहरों में परिवर्तनशील पर्यावरणीय गुणों से लगाया जा सकता है। शहरों में स्वास्थ्य सेवा, टीकाकरण कवरेज और कार्य से संबंधित दुर्घटनाओं और चोटों की दर तक पहुँच के मामले में महत्वपूर्ण समानता के मुद्दे हैं। इन शहरी स्वास्थ्य असमानताओं की पहचान करने के लिए, स्वास्थ्य और स्वास्थ्य निर्धारकों पर डेटा को अलग-अलग करना और स्थानिक और

सामाजिक-आर्थिक अंतरों की जाँच करना महत्वपूर्ण है। शहरी स्वास्थ्य और कल्याण को बेहतर बनाने के लिए प्रभावी हस्तक्षेपों के लिए अक्सर औपचारिक स्वास्थ्य क्षेत्र द्वारा पेश की जा सकने वाली कार्रवाइयों से कहीं आगे की कार्रवाई की आवश्यकता होती है। कई अलग-अलग सामाजिक क्षेत्रों (जैसे जल आपूर्ति, स्वच्छता, आवास, परिवहन, शिक्षा) और सरकार के सभी स्तरों - स्थानीय, प्रांतीय और राष्ट्रीय की भागीदारी की आवश्यकता है। शहरीकरण, पर्यावरण परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य और कल्याण के बीच संबंधों की जटिलता के लिए स्वास्थ्य, कल्याण और शहरी पर्यावरण के प्रति एक व्यवस्थित दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

शहरीकरण का महत्त्व-

देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनीति परिदृश्य को आकार देने के लिए शहरीकरण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शहरीकरण औद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण को बढ़ावा देकर आर्थिक विकास हेतु उत्प्रेरक का काम करता है। इसके अतिरिक्त, शहरीकरण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं जैसे सामाजिक बुनियादी ढांचे के विकास में सहायता करता है। यह सांस्कृतिक एकीकरण को भी बढ़ावा देता है, जिससे सामाजिक उन्नति होती है।

विकास का प्रतीक शहरीकरण क्यों?

1. शहरी क्षेत्रों में रोज़गार की संभावनाएँ अधिक होती हैं, इसलिये वहाँ ज़्ायादा लोग रोज़गार में लगे होते हैं। यहाँ ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में वे अधिक धन कमाते हैं और राष्ट्रीय आय में योगदान करते हैं।

2. आँकड़ों के अनुसार, 2001 तक भारत की आबादी का 27.81प्रतिशत हिस्सा शहरों में रहता था। 2011 तक यह 31.16 प्रतिशत और 2018 में 33.6 प्रतिशत हो गया।

3. आज हर तीन भारतीयों में से एक शहरों और कस्बों में रहने लगा है।

4. संयुक्त राष्ट्र की एक नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान में विश्व की आधी आबादी शहरों में रहने लगी है और 2050 तक भारत की आधी आबादी महानगरों और शहरों में रहने लगेगी।

5. भारत में शहरीकरण तेज़ी से बढ़ रहा है और वैश्विक स्तर पर भी तब तक कुल आबादी का 70 प्रतिशत हिस्सा शहरों में रह रहा होगा।

शहरीकरण के प्रभावः शहरीकरण भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के विभिनन पहलुओं पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

1. आर्थिक प्रभावः शहरीकरण से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है, रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं और आय का स्तर बढ़ सकता है।

2. सामाजिक प्रभावः शहरीकरण के परिणामस्वरूप शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और मनोरंजन जैसी सामाजिक सेवाओं में सुधार हो सकता है।

3. पर्यावरणीय प्रभावः वनों की कटाई, प्रदूषण और अपशिष्ट प्रबंधन चुनौतियों जैसे कारकों के कारण शहरीकरण पर्यावरणीय गिरावट का कारण बन सकता है।

शहरीकरण की चुनौतियाँ- तेजी से बढ़ता शहरीकरण अपने साथ कई चुनौतियाँ लाता है जिनका समाधान करने की आवश्यकता है। जो शहर नए निवासियों की आमद के लिए तैयार नहीं हैं वे अक्सर निम्नलिखित समस्याओं से पीड़ित होते हैं-

अतिभारित बुनियादी ढांचाः कई शहरों में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि से निपटने की क्षमता नहीं है। यह विशेष रूप से परिवहन और ऊर्जा बुनियादी ढांचे को प्रभावित करता है। भीड़भाड़ वाली सड़कें, सार्वजनिक परिवहन की कमी और अपर्याप्त ऊर्जा आपूर्ति अक्सर इसके परिणाम होते हैं। यदि इन समस्याओं का शीघ्र समाधान नहीं किया गया, तो ये शहर में जीवन की गुणवत्ता को काफी हद तक कम कर सकती हैं।

आवास का अभावः शहरीकरण के कारण उत्पन्न एक और बड़ी समस्या किफायती आवास की कमी है। कई शहरों मेंए विशेषकर ग्लोबल साउथ के महानगरों में, विशाल मलिन बस्तियाँ और अनौपचारिक बस्तियाँ उभर रही हैं जिनमें लोग अनिश्चित परिस्थितियों में रहते हैं। ये बस्तियाँ अक्सर भीड़भाड़ वाली होती हैं और इनमें पानी, स्वच्छता या बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव होता है। ऐसे वातावरण में रहने से स्वास्थ्य संबंधी बड़े खतरे पैदा होते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन- शहरीकरण की एक विशेष गंभीर समस्या पर्यावरण प्रदूषण है। शहर, विशेषकर उभरते देशों में, ग्रीनहाउस गैसों में प्रमुख योगदानकर्ता हैं। औद्योगिक गतिविधियों, यातायात और ताप से अत्यधिक वायु प्रदूषण होता है, जिसके निवासियों के स्वास्थ्य पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं। शहर भी भारी मात्रा में कचरा उत्पन्न करते हैं जिनका अक्सर पर्याप्त रूप से निपटान नहीं किया जाता है। तथाकथित शहरी ताप द्वीप एक और समस्या है जो शहरीकरण के कारण और भी गंभीर हो गई है। सघन विकास और हरे.भरे स्थानों की कमी के कारण, शहर अक्सर आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में काफी गर्म होते हैं। यह गर्मी जीवन की गुणवत्ता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है और विशेष रूप से बुजुर्गों और बच्चों के लिए स्वास्थ्य समस्याएं पैदा कर सकती है।

स्वास्थ्य समस्याएँ और शहरीकरण- तेजी से बढ़ता हुआ शहरीकरण और शहरों की जनसंख्या में हो रही बढोतरी को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रमुख चुनौतियों के रूप में देखा जाता रहा है। अनुमान है कि 1990 और 2025 के बीच विकासशील देशों में शहरी आबादी में तीन गुना वृद्धि हो चुकी होगी और यह कुल जनसंख्या के 61 प्रतिशत के बराबर हो जाएगी। इस बढ़ती हुई शहरी आबादी को देखते हुए पानीए पर्यावरणए हिंसा और चोट, गैर संचारी रोगों जैसी स्वास्थ्य संबंधी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा तम्बाकू के उपयोग, अस्वास्थ्यकर आहार, शारीरिक अकर्मण्यता और महामारियों के फैलने से जुड़ी आशंकाएँ और खतरे भी कोई कम चुनौतीपूर्ण नहीं हैं।

कुछ अन्य चुनौतियाँ:- हमारे देश का लगभग हर शहर सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित है। स्वास्थ्य सेवाओं के निजीकरण एवं व्यवसायीकरण ने शहरों में असमानताओं को जन्म दिया है। शहरों की सड़कों पर गड्ढे, सीवर प्रणाली का अभाव एवं जल-जमाव से होने वाली परेशानियाँ, बिजली, पानी एवं संचार सुविधाओं का अस्त-व्यस्त व असमान रूप शहरी जीवन को इतना अधिक समस्यामूलक बना देता है कि कई शहरों में जाने की कल्पना मात्र से सिहरन होने लगती है। अपराध की दृष्टि से भी शहर तुलनात्मक रूप से अधिक असुरक्षित हैं। कंक्रीट के जंगल में रहने वाले लोग अपने पड़ोसी को भी नहीं जानते। भावनाशून्यता, संवादहीनता और व्यक्तिवादिता की प्रवृत्ति शहरी जनसंख्या के जीवन का हिस्सा बन गई है।

समाधानः शहरीकरण के नकारात्मक परिणामों को कम करने के लिए टिकाऊ शहरी नियोजन अत्यंत महत्वपूर्ण है। पहले से ही कई दृष्टिकोण और समाधान मौजूद हैं जो शहरीकरण की चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकते हैं।

- सतत ऊर्जा आपूर्तिः फोटोवोल्टिक्स जैसी नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग, शहरों को जीवाश्म ईंधन पर कम निर्भर बनाने में मदद कर सकता है। सौर ऊर्जा एक आशाजनक समाधान है, खासकर धूप वाले क्षेत्रों मेंए शहरों की ऊर्जा जरूरतों को स्थायी तरीके से पूरा करने के लिए। पवन ऊर्जा और बायोमास भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- हरित स्थान और पार्कः शहरों में हरित स्थान न केवल सौंदर्यशास्त्र के लिए, बल्कि निवासियों की भलाई के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। वे शहर की हलचल से मुक्ति दिलाते हैं और हवा की गुणवत्ता में सुधार करते हैं। वे शहरी ताप द्वीपों को ठंडा करने में भी योगदान देते हैं और जलवायु परिवर्तन के परिणामों को कम करने में मदद करते हैं।
- बुद्धिमान यातायात योजनाः भविष्योन्मुखी यातायात योजना शहरों में यातायात तनाव को कम करने में मदद कर सकती है। सार्वजनिक परिवहन, साइकिल पथ और पैदल यात्री क्षेत्रों का विस्तार निजी यातायात को कम करने में मदद कर सकता है। इससे न केवल यातायात की भीड़ कम होती है, बल्कि co2 उत्सर्जन में भी कमी आती है।
- सतत जल प्रबंधनः पानी सबसे मूल्यवान संसाधनों में से एक है, खासकर बढ़ते शहरों में। सतत जल प्रबंधन जो पानी की पुनप्राप्ति और पुनः उपयोग पर निर्भर करता है, पानी की खपत को कम करने में मदद कर सकता है। कई शहरों में, विशेषकर शुष्क क्षेत्रों में, यह सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है।
- संसाधनों तक समान पहुंचः टिकाऊ शहरी नियोजन का एक अन्य लक्ष्य शहर के सभी निवासियों को संसाधनों तक समान पहुंच प्रदान करना होना चाहिए। इसमें शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के अलावा सार्वजनिक सेवाएँए कार्य और डिजिटल मीडिया जैसी चीज़ें भी शामिल हैं। इस पहुंच के बिना, सामाजिक असमानताएं और बढ़ सकती हैं, जिससे शहरी समुदाय के भीतर तनाव और संघर्ष हो सकता है।

- असंतुलित शहरी विकास: आज देश के सम्मुख शहरीकरण का प्रबंधन सबसे जटिल समस्या है। शहरों की चकाचैंध आसपास के इलाकों में रहने वाले लोगों के लिये हमेशा से ही आकर्षण का विषय रही है और वे प्रायः इस आकर्षण के वशीभूत होकर शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं, जहाँ पहले से ही लोगों की भरमार होती है। वहाँ पहुंचकर वे भी आवास, जलापूर्ति, जलमल निकासी, स्थानीय परिवहन और रोज़गार के अवसरों जैसी पहले से ही मौजूद गंभीर समस्याओं के शिकार हो जाते हैं । शहरी गरीब अनेक जटिल रोगों सहित कई प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के शिकार होते हैं। शहरी क्षेत्रों में लोगों की बढ़ती हुई संख्या के कारण सरकारों की अधिकांश बुनियादी सेवाएँ प्रदान करने की क्षमता पर भारी दबाव पड़ता है। अवैध रूप से बसने वाली स्लम बस्तियाँ शहरों का अविभाज्य हिस्सा बन चुकी हैं। इनमें रहने वाले लोगों को पेयजल और कचरे के निपटान जैसी बुनियादी सुविधाएँ तक नहीं मिल पातीं।

शहरीकरण हेतु सरकार की प्राथमिकता:

शहरी क्षेत्रों का सतत, संतुलित एवं समेकित विकास सरकार की मुख्य प्राथमिकता एवं शहरी विकास का एक केंद्रीय विषय है। जिस तरीके से देश में 'शहरीकरण' की प्रक्रिया का प्रबंधन होगा, उसी से यह निर्धारित होगा कि किस सीमा तक शहरी अवस्थांतर का लाभ उठाया जा सकता हैं। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के संचालन में शहरों के उभरने से भारत अपनी विकास यात्रा के एक अहम पड़ाव पर है, जहाँ शहरों/कस्बों के विकसित होने, संपन्न होने तथा निवेश एवं उत्पादकता का व्यावसायिक केंद्र बनने के लिये पर्याप्त अवसरों का सृजन अवश्य किया जाना चाहिये। जलवायु परिवर्तन की गंभीर स्थिति को कम करने के लिये स्मार्ट सिटी मिशन जैसे अभियानों को पर्यावरण, सतत एवं अवसंरचना विकास के लिये अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रयासों, उत्सर्जन में कमी एवं आपदा के प्रति शहरों का लचीलापन बढ़ाने के अनुरूप तैयार किया गया है। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत अभिनव एवं आधुनिक निर्माण प्रौद्योगिकी के उपयोग की सुविधा प्रदान करने के लिये प्रौद्योगिकी सब-मिशन भी शुरू किया गया है। इसके अलावा शहरों में रहने की उपयुक्तता के मापन की आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय की परियोजना में सभी 79 संकेतक विभिन्न सतत विकास लक्ष्यों से जुड़े हैं। इनमें सार्वजनिक परिवहन से लेकर पानी के दोबारा इस्तेमाल, प्रदूषण आदि को शामिल किया गया है।

गाँवों पर ध्यान दिये बिना अधूरा रहेगा विकास-

- भारत को गाँवों का देश कहा जाता है और यहाँ की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में रहती है।
- देश के आधे से अधिक लोगों का जीवन खेती पर निर्भर है, इसलिये यह कल्पना करना बेमानी होगा कि गाँव के विकास के बिना देश का विकास किया जा सकता है।
- थोड़ी सी सुविधाएँ प्रदान कर देने मात्र से गाँवों का विकास होना बहुत मुश्किल है। बदलते वक्त के साथ अगर भारतीय गाँवों पर ध्यान नहीं दिया गया तो इनका अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है।
- ग्रामीण विकास के ज़रिये ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उत्थान के लिये सरकार ने इस बात को स्वीकार किया है कि आवास और बुनियादी सुविधाएँ आर्थिक विकास के मुख्य वाहक हैं।
- सरकार के ग्रामीण विकास कार्यक्रम का एजेंडा समावेशी विकास पर आधारित है, जिसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि विकास का लाभ गरीब और वंचित वर्गों तक पहुँचे।
- ग्रामीण संकट का मूल कारण वहाँ रहने वालों की आय का कम होना है। इसके लिये सरकार ने रोज़गार सृजन, कौशल विकास और उद्यमिता से संबंधित कई योजनाओं, कार्यक्रमों और पहलों की शुरुआत की है।

साहित्यिक विश्लेषण- वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शहरीकरण विकास की अनिवार्य प्रक्रिया बन चुका है, परंतु इसकी तीव्रता सतत जीवन पद्धति के सामने गंभीर संकट उत्पन्न कर रही है। साहित्य केवल संवेदना का माध्यम नहीं, अपितु सामाजिक चेतना का वाहक भी है, जो सतत विकास की अवधारणा को लोकमानस तक पहुँचाने में सक्षम है। यह शोध-पत्र शहरीकरण से उत्पन्न पर्यावरणीय, सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों की पहचान करते हुए हिंदी साहित्य में उनके अभिव्यक्त रूपों का विश्लेषण करता है। तेजी से बढ़ते शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या विस्फोट, प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव, पर्यावरणीय क्षरण, सामाजिक असमानता, और जीवनशैली में तनाव जैसी अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। इन समस्याओं की गूंज आधुनिक हिंदी साहित्य में स्पष्ट सुनाई देती है। यह शोध इन दोनों आयामोंकृसामाजिक यथार्थ और साहित्यिक दृष्टिकोण को एक साथ

जोड़ने का प्रयास करता है। सतत जीवन का अर्थ प्रकृति, समाज और विकास के मध्य संतुलन से है। भारत जैसे विकासशील देश में शहरीकरण की गति तीव्र है, जिससे शहरी क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे पर अत्यधिक दबाव पड़ता है। जल और वायु प्रदूषण, हरित क्षेत्रों का क्षरण, और सामाजिक विषमता जैसी समस्याएँ सतत जीवन को बाधित करती हैं। हिंदी साहित्य में इन संकटों की अभिव्यक्ति व्यापक रूप में देखी जा सकती है। अज्ञेय की कविताओं में आधुनिक व्यक्ति का अकेलापन और आत्मसंघर्ष है। नागार्जुन और केदारनाथ सिंह ने पर्यावरणीय चेतना को स्वर दिया है। शमशेर बहादुर सिंह की कविता में शहरी जीवन की द्वंद्वात्मकता परिलक्षित होती है। कहानी और उपन्यासों में भी शहरी जीवन के संकटों का प्रभावी चित्रण मिलता है। भीष्म साहनी की कहानियाँ सामाजिक विषमता को उजागर करती हैं। राही मासूम रजा का 'आधा गाँव' शहरीकरण के सामाजिक प्रभावों का सजीव दस्तावेज है। निर्मल वर्मा की रचनाओं में मानसिक विघटन और सांस्कृतिक खोखलापन परिलक्षित होता है। हरिशंकर परसाई और श्रीलाल शुक्ल जैसे व्यंग्यकारों ने शहरीकरण की विडंबनाओं को तीखे और प्रभावी व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है, जो समाज को जागरूक करने में सक्षम है। सतत शहरी जीवन के लिए साहित्य एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह समाज को न केवल जागरूक करता है बल्कि व्यवहार परिवर्तन की प्रेरणा भी देता है। इसके माध्यम से नीति-निर्माताओं को नए दृष्टिकोण मिल सकते हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शहरी जीवन की समस्याएँ केवल भौतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक भी हैं। सतत जीवन के लिए साहित्य को एक प्रभावशाली उपकरण के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है। शहरित साहित्य आंदोलनश् जैसी पहलें भविष्य की दिशा में सार्थक कदम हो सकती हैं। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शहरीकरण विकास की अनिवार्य प्रक्रिया बन चुका है, परंतु इसकी तीव्रता सतत जीवन पद्धति के सामने गंभीर संकट उत्पन्न कर रही है। यह शोध-पत्र शहरीकरण से उत्पन्न पर्यावरणीय, सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों की पहचान करते हुए हिंदी साहित्य में उनके अभिव्यक्त रूपों का विश्लेषण करता है। साहित्य केवल संवेदना का माध्यम नहीं, अपितु सामाजिक चेतना का वाहक भी है, जो सतत विकास की अवधारणा को लोकमानस तक पहुँचाने में सक्षम है। तेजी से बढ़ते शहरीकरण और सतत जीवन की चुनौतियों से जुड़ी चिंताएँ आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में अभिव्यक्त हुई हैं। हिंदी साहित्यकृविशेषकर उपन्यास, कहानियाँ और कविताएँकृने शहरों में बढ़ते प्रदूषण, सामाजिक विषमता, विस्थापन और मानवीय मूल्यों के ह्रास को संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है।

निष्कर्ष

भारत में प्रतिदिन शहरीकरण बढ़ रहा है, जिसमें संभावनाओं और उच्च जीवन स्तर के लिए पूर्ण समर्थन है। जैसे-जैसे शहरीकरण तेज होता है, यह संतुलित, निष्पक्ष और समावेशी विकास में बाधाएं पैदा करता है। लोग एक-दूसरे की संस्कृतियों के बारे में सीखते हैं और ज्ञान साझा करते हैं, जो लोगों के बीच की सीमाओं को तोड़ने में मदद करता है। वास्तव में, सामाजिक संरचनाएँ बिखर रही है, जैसे कि पारिवारिक संरचनाएँ संयुक्त से एकल में परिवर्तित हो रही हैं। अंत में शहरीकरण के परिणामों में परिवर्तन होता है और शहरी लोगों की मानसिकता में व्यवहार और उचित प्रेरणा में आधुनिकीकरण होता है जो अप्रत्यक्ष रूप से देश को तेजी से आर्थिक विकास प्राप्त करने में मदद करता है।

संदर्भ

1. डी. एंट्रोबस (2011) स्मार्ट हरित शहरः आधुनिकीकरण से लचीलेपन तक?, शहरी अनुसंधान और अभ्यास , पृ. 207-214
2. जेड. आलम, पी. न्यूमैन (2018) स्मार्ट शहर को पुनर्परिभाषित करनाः संस्कृति, चयापचय और शासन, स्मार्ट सिटीज, पृ. 4-25
3. एस ई बिबरी (2019)बड़े डेटा के युग में स्मार्ट और अधिक स्मार्ट शहरों की स्थिरता पर: एक अंतःविषयक और बहुविषयक साहित्य समीक्षा, जर्नल ऑफ बिग डेटा, पृ. 1-64
4. ए. अबू-रयाश, आई. डिंसर (2021) स्मार्ट शहरों के बेहतर प्रबंधन के लिए एकीकृत स्थिरता प्रदर्शन संकेतकों का विकास, सतत शहर और समाज, पृ. 67
5. आर. अल शरीफ़, एस. पोखरेल (2022) स्मार्ट सिटी के आयाम और संबंधित जोखिमः साहित्य की समीक्षा, सतत शहर और समाज, पृ. 77
6. एच. अलीज़ादेह, ए. शरीफ़ी (2023) एक सामाजिक स्मार्ट शहर की ओररू स्मार्ट शहरों के सामाजिक न्याय आयाम को स्पष्ट करना, सस्टेनेबल सिटीज एंड सोसाइटी, पृ. 95
7. Chauhan, P. (2025). धार्मिक सहिष्णुता एवं सांप्रदायिक सौहार्द में सिख गुरुओं का योगदान. Hill Quest: Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal, 12(1), 173. http://hillquest.pratibha-spandan.org